#पोवार_इतिहास ▶️

पंवार(पोवार) समाज के स्व. श्री लखाराम जी , रेव्हन्यू इन्सपेक्टर दोंदीवाडा इनके द्वारा सन १८९२ में लिखित किताब *पँवार धर्मोपदेश* में एक काव्य लिखा है, जिसमे वे मध्यभारतीय ३६ कुल पंवारो का उल्लेख करते हुये उनसे आव्हान करते हैं की ---

गौतम, राउत, पारधी, बीसन है धनवान।
ठाकुर, पटल्या,चौधरी, राणा, डाला, चौहान।।
पुन्ड, बघेला ,बोपच्या, कटरा सेंड्या जान।
रनमत, हनवत, टेम्भरया, क्षीरसागर पहिचान ।।
अम्बुलिया, कोल्ह्या, साहरया ,परहार।
भैरों ,भोयर ,भगत, तुरूश, येडा, जैयतवार।।
रंजाहड, रंदीवा कहूं, फरीदाले, रिन्हायत मान।
राहंगडाला, सरनागत, सोनवान्या शान ।।
हरिनखेडिया जान लो, छतीस कुरी बखान।
लखाराम ऐसी कहें, राखो इनसे ध्यान।।
निज जातिन की कुरी सबे निकसी छतिसि धाम।
जो इनसे ज्यादा कहे, सो लिखे अपनो नाम।।
▶️▶️▶️▶️▶️▶️▶️▶️▶️▶️▶️▶️

लखाराम ऐसी कहें, राखो इनसे ध्यान।।
निज जातिन की कुरी सबे निकसी छतिसि धाम।।
▶️▶️▶️▶️▶️▶️▶️▶️▶️▶️▶️▶️▶️